R.N.I.No.-CHHBIL00984

संपादकीय कार्यालयः– *'गुड़दुम'*
सन्मति इलेक्ट्रीकल्स, सन्मति गली,
दुर्गा चौक के पास, जगदलपुर,
जिला–बस्तर, छ.ग. पिन–494001
मो.–09425507942
ईमेल–gurdum2016@gmail.com

सुदूर आदिवासी क्षेत्र की लोक संस्कृति व साहित्य का हल्बी–हिन्दी त्रैमासिक

गुड़दुम

मूल्य पच्चीस रूपये मात्र•

वर्ष–8 (अंक–2), जनवरी–मार्च 2024

प्रकाशक एवं संपादक
(शब्दांकन व डिजाइनिंग)
सनत कुमार जैन
प्रधान संपादक
पद्मश्री धर्मपाल सेनी
संपादक
विश्वनाथ देवांगन
सह संपादक मंडल
नरेन्द्र पाढ़ी
बी.एन.आर.नायडू
मुख पृष्ठ
कु. रूपल टाटिया

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से बस्तर पाति, संपादक मंडल या संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। रचनाकारों द्वारा मौलिकता संबंधी लिखित/मौखिक वचन दिया गया है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यवसायिक। समस्त विवाद जगदलपुर न्यायालय के अंतर्गत।

सभी रचनाकारों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपनी रचनाएं कृतिदेव 14 नंबर फोण्ट में एवं एक्सेल, वर्ड या पेजमेकर में ईमेल से ही भेजने का कष्ट करें जिससे हमारे और आपके समय एवं पैसों की बचत हो। रचना में अपनी फोटो, पूरा पता, मोबाइल नंबर एवं ईमेल आईडी अवश्य लिखें। रचना के प्रत्येक पेज में नाम एवं पता भी लिखें।

प्रकाशक, मुद्रक, संपादक, स्वामी सनत कुमार जैन द्वारा सन्मति प्रिन्टर्स, सन्मति इलेक्ट्रीकल्स, सन्मति गली, दुर्गा चौक के पास, जगदलपुर से मुद्रित एवं जगदलपुर के लिए प्रकाशित।

सहयोग राशि–साधारण अंकः पच्चीस रूपये, एकवर्षीयः एक सौ रूपये, पंचवर्षीयः पांच सौ रूपये, संस्थाओं एवं ग्रंथालयों के लिएः एक हजार रूपये। सारे भुगतान मनीआर्डर व ड्राफ्ट ***सनत कुमार जैन*** के नाम पर संपादकीय कार्यालय के पते पर भेजें या स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रमांक **10456297588** में भी बैंक कमीशन 50 रूपये जोड़कर सीधे जमा कर सकते हैं।

पाठकों से रूबरू/2
मोचो गोठ/विश्वनाथ देवांगन/5
नानी कहानी/विश्वनाथ देवांगन
खजेना/8
आया किरिया/9
काचा मारना/10
सगनाहा/11
बेर उदली/18
लोककथा/एनकू दादा/उर्मिला आचार्य/12
व्यंग्य/वीरेन्द्र देवांगन/16
हल्बी के जानूं/30
हल्बी चो शब्द मन/25
बस्तर संस्कृति/नाग राजा चो गुड़ा/शिवशंकर कुटारे/27
स्पष्टीकरण/32

हल्बी कविता–

दिनेश कुमार विश्वकर्मा/7
वंदना गीत/महेश पाण्डे/13
सूरज नारायण कश्यप/14
देशवती कौशिक/14
अशोक नेताम/15
गणेश मानिकपुरी/19
केशरचंद्र पुजारी/19
गिरिजा प्रसाद पाण्डे/20
सनत सोरी/21
डी राजा सेठिया/22
पुरूषोत्तम पोयाम/23
हितेन्द्र कोण्डागंया/23
अशोक नेताम/24
नरेन्द्र पाढ़ी/25
विश्वनाथ देवांगन/26
देशवती कौशिक/29

भाषा बोली का संकट

ये संकट एक ऐसा संकट है जो इस सदी का धरातलीय सत्य है जिसका आना सौ प्रतिशत सुनिश्चित है।

इस युग के कुछ सत्य हैं जो घटित होने ही हैं चाहे आप जितनी भी चिन्ता व्यक्त कर लें, चाहें आप जितना हाथ पैर मार लें ये सबकुछ होना ही है। जैसे कि संस्कृति में बदलाव, रहन सहन में आमूल चूल बदलाव, सोच में बदलाव, खान पान में बदलाव और भाषा बोली में बदलाव!

न तो ये बदलाव बदले जा सकते हैं न ही रोके जा सकते हैं। हां आप चाहें तो इसको रोकने का अटूट प्रयास करते हुये खुद को हीरो समझ सकते हैं। यहां कुछ अति आशावादी कह सकते हैं कि हम यूं ही हार नहीं मान सकते न ही हम यूं ही समर्पण कर सकते हैं। हमें अपनी जीवटता जरूर दिखानी होगी।

सच है ये बात!

पर क्या हम ये देख नहीं रहे हैं या अनुभव नहीं कर रहे हैं कि उपरोक्त बिन्दुओं में दुनिया बदल सी गयी है हमारे ही जीवनकाल में बल्कि लगभग बीस पच्चीस बरस में। विकास का मतलब है दुनिया की बदलाव की गंगा में खुद को छोड़ देना। ज्यादातर सफल व्यक्ति हमारे आसपास इसी तरह के ही नजर आते हैं। हां, ये अलग बात है कि हम इस मुगालते में ही जीयें कि दुनिया नहीं बदलेगी। दुनिया आगे बढ़ जायेगी और हम वहीं के वहीं।

इन बातों का दुखद पहलू यह है कि इस द्वंद की चक्की में सिर्फ गांव पिस रहा है। वहां के लोग आज भी अपने विकास की राह जोह रहे हैं। उनके रहनुमा बने बड़े बड़े मोटे मोटे आंसू बहाने वाले लोग मोट बनते जा रहे हैं उनकी तिजोरियां अधिक भोजन के चक्कर में उलटी कर रही हैं।

तो क्या हम विकास की इस रेलमपेल में स्वयं को छोड़ दें ? खुद को बगैर श्रम, जीवटता के बहने दें ?

नहीं कदापि नहीं! मनुष्य का मतलब ही है प्रगतिशील होना। अगर मनुष्य प्रगतिशील न होता तो पाषाणयुग से इस जेटयुग में कैसे आता। मानव की प्रगतिशीलता ने ही मानव को खोजी प्रवृत्ति का बनाया है तो वह चुपचाप तो नहीं बैठ सकता। वह खोजता रहेगा सारी दुनिया को या फिर खुद को। मानव की खोजी प्रवृत्ति से जो ज्ञानोपर्जान होता है वही उसकी उपलब्धि है शेष सबकुछ माध्यम है।

अतः ज्ञान पर स्वयं को केन्द्रित करना ही इस समस्या का उपाय है।

अगर हम अपने ज्ञान को अपनी भाषा बोली और जीवन में उतारेंगे और वह दुनिया की वर्तमान आवश्यकता की जरूरत का होगा तो कोई माई का लाल हमारे रीति रिवाज, संस्कार को

बदलने में असमर्थ होगा। वरना विकास के यज्ञ में समिधा बन कर सबकुछ को नष्ट होना ही है।

ज्यादातर लोकजीवन और लोकबोलियों को लेखकों ने मनोरंजन के रूप में ही दुनिया के समक्ष परोसा है। जैसा परोसा है वैसी ही दुनिया ने प्रतिक्रिया दी है। हमने कभी अपने लोकजीवन के चिंतन को दुनिया के समक्ष नहीं रखा। क्या हमारे लोकजीवन में चिंतन नहीं है ? अध्यात्म नहीं है ? वैज्ञानिकता नहीं है ?

हिन्दी और संस्कृत में भी इस दौर ने संकट पैदा किये। परन्तु जब भाषा ने अपनी दमदारी अपने ज्ञान के साथ दुनिया के समक्ष रखी तब जाकर दुनिया आज नतमस्तक है।

क्या लोकसाहित्यकारों को अपने लेखन में मात्र कुकड़ी, सुकसी, कुकूर, मद, बैगा से आगे नहीं बढ़ना चाहिये ? साहित्यलेखन क्या मात्र काव्यलेखन ही होता है ? क्या आदिम संस्कृति का पहनावा ओढ़ावा ही उसकी विशेषता होती है ?

क्या किसी लोकजीवन में उनकी कुछ विशिष्टता नहीं होती है ? नाचना गाना ही विशिष्टता है ? उनके समाज का कोई समाजशास्त्रीय अवदान नहीं होता है ? हम क्यों नहीं उन सबको आगे बढ़ाते हैं ? क्यों नहीं अपने लेखन में ऐसे विषयों को बार उठाते हैं ? अपनी कविताओं में नदी, तालाब, झाड़ पेड़, कुत्ते, मछली आदि से आगे नहीं बढ़ते हैं ?

दुनिया में जिस तरह कविताओं में प्रयोग किये जा रहे हैं वैसे प्रयोग अपनी लोकबोली में क्यों नहीं करते ? उस तरह के विषय क्यों नही लेते ?

हम क्यों लोकबोली के लेखन का मतलब सिर्फ पहनावे और ढोल बाजे तक ही मान कर चलते हैं ? तमाम सरकारी पैसों से चलने वाली संस्थाएं सिर्फ लोकबोली के संरक्षण के नाम पर अपने परिवार का संरक्षण करती दिखती हैं ?

वहुत से लेखक जो लोकबोली लेखन के स्थापित लेखक माने जाते हैं उनका साहित्यिक अवदान क्या है ? मेवायुक्त सरकारी पद, सरकारी धन का गबन और सराकरी सुखसुविधायुक्त वातावरण में रह रह कर लोकसंरक्षण की गंदी डकार!

इस आपाधापी वाले दौर में कुछ तथाकथित नाम तो बगैर योगदान के ही स्वर्णपट्ट में अंकित कर दिये गये हैं। हर गोष्ठी के मुख्य अतिथि, संबोधन में 'जाने माने, बड़े कवि, जानकार!'!

इन्हीं तथाकथित बड़े नामों ने अपने योगदान की समीक्षा न हो इसलिये नये लोगों के लिये मार्ग अवरूद्ध कर रखा है। उनके शोधात्मक लेखन में एक ही विषय पर लगभग सभी लेखकों ने कलम चला कर दावा किया है कि यह उनको शोध है।

इस लेखक की विषयवस्तु लोकबोली के अक्षरों की है। कुछ लोगों ने हल्बी या हलबी पर कलम चलायी है। कुछेक तो वाद्य यंत्र, पहनावे और मद की आवश्कता साबित करने से आगे नहीं बढ़ पाये हैं।

ज्यादातर शोध आलेख यथार्थ से परे, धरातलीय सत्य से दूर हैं। पुराने शोध आलेखों की बदली शब्दावली मात्र है। और लगभग सभी आलेख आजादी के समय के अंग्रेज मिशनरी वेरीयर एल्विन के लिखे शोध आलेख से लिये गये हैं। न तो उनके पहले न ही उनके बाद किसी ने प्रमाणिक रूप से शोध कार्य किया है।

दुखांत यह है कि आज भी यही चल रहा है। किसी की रूचि ही नहीं है कि जमीनी हकीकत दुनिया के सामने रखी जाये। एक अंग्रेजी भाषी ने गांव में आकर गांव की बोली सीख ली। उस दौर में जब कुछ भी आसान न था। उस युग में आदिम जीवन पर एक ऐतिहासिक पुस्तक लिख कर उनके ही समाज के लिये मूलग्रंथ लिख गया। और कभी कभी ऐसा लगता है कि उसे ही मौलिक ग्रंथ मान लिया गया है उन लोगों द्वारा भी।

तब तो कोई ऐसा व्यक्ति ही नजर नहीं आता जो उस इतिहास की समीक्षा कर सके जिसे उस व्यक्ति ने लिखा था जो इस क्षेत्र में अपने मिशनरी कार्य से आया था।

क्या हम मान सकते हैं कि उसने अपने कार्य के प्रति ईमानदारी रखी होगी। क्या उसने अपने फायदे या अपनी संस्था के लंबे समय तक फायदे के लिये मूल बातों को अपने हिसाब से नहीं रचा होगा। कई मनगढंत बातें जोड़ी होंगी तो कुछ वास्तविक बातों का उल्लेख नहीं किया होगा।

और मजे की बात यह है कि हमारे तथाकथित बड़े स्थापित साहित्यकार सिरहा गुनिया, लांदा और सल्फी से बाहर ही न निकलने की कसम खा रखी है। जाने कब उनकी देशी दारू का नशा उतरेगा।

कुछ तो महुआ की शराब को संस्कृति से जोड़ने पर उतारू हैं। भले ही उनका लिखित 'शोध आलेख' न मिले पर भाषणबाजी सुनने को मिलती रहेगी। आदिम संस्कृति को एक नये दृष्टिकोण से देखने की जरूरत है न कि सरकारी कार्य की तरह निपटाने की, खानापूर्ति करने की जरूरत है।

हर त्यौहार रीति रिवाज के भौतिक वर्णन से वाहवाही लूटने की जगह उनके वास्तविक महत्व को समझने की जरूरत है।

जाने कब तंद्रा टूटेगी।

सनत कुमार जैन
मो.–9425507942

मोचो गोठ

गुड़दुम के तुमचो हाते दखुन,
मके खूबे हरिक लागली।
तुमी बले खिंडिंक हरिक होलास होयदे।

जय जोहार

मांटी मांय के शरन करेंसे। जमाय पढ़ू आरू लिखू सियान सजन मन के डंडा शरन पांय पडेंसे। ये बेरा ने कोनी कोनी चे लिखसत आरू पढ़सत। नाहले जमाय चो हाते मोबाईल इली एदांय। ये बेरा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चो जमाना होली से आजी काली टिक–टिक दबाला की सुना,लिखा,पढ़ा,चीना,बाना जमाय बानी आपलो मन चो लिख लो बराबर तियार करलो मीरेसे। तुमी जमाय लिखासीत पढ़ासीत ये खूबे बड़े भारी गोठ आय आरू मान चो आरू धियान चो गोठ आय। आजी काली आमी आपलो मांय भासा,आपलो घर गोठ चीना–बाना,रीति–नीति तिहार–बहार,चीना–बाना संगे–संगे लोलो–बालो,आया–बूबा,सगा–सील–समाज मन संगे बले बसा–उठा नी करूं ना ये के उतरो मान देतो के भूलकुं से जसन की देतोर समया चो मांग आसे। फेर आपलो माटी मांय आरू सगा समाज संगे देश काल चो ससरंग के लिखतो बेरा चो मांग आसे। तेबे येतो बेरा ने आमचो नवा पीड़ी दखेदे आरू पडुन भाती गुनेदे। मान्तर लिख दे कोन ये सबले बड़े ये बे चो सवाल आय। ये चो उतर बले आमचोय लगे आसे आमी लिखवां आमचो नवा पीढ़ी के लिखावां। बाट दखाक पड़ेदे,उन बाट ने हिंडाक पड़ेदे। बाट नी रले बाट दखाया नी रले कोन उन बाट ने जादे। आमचो सियान साहित्यकार आरू मानेया सजन मन हल्बी के मान आरू मया ने साहित चो रचना करते इला सत आरू पूरे बले ये ते रदे। अई लिखा पढ़ी संगे बस्तर माटी चो मान आरू कीर्ति के पूरे नेतो आरू जमाय के हल्बी जोन आमचो बस्तर रियासत चो राजभाषा रली जे ने लिखा पढ़ी आरू राज–काज चो आदेश निरदेश पारित होते रली। उन लाग के नी छाड़ून उन चो मान के बाड़ती करतो काजे लिखतो समया चो खूबे बड़े भारी दागा आय। अई आर धरातो काजे ये गुड़दुम पत्रिका के मुर करलो आसे मय अइ मानेंसे।

अदाय ये सवाल मन ने अयसे कि लिखुआत कोन। ये बेरा हल्बी ने लिखेया चो अंकाल पड़ली से। दूय चार जने सरकारी काम योजना मन के ढेकलून ठेगलून काम चलातोर काजे खोजून मीरान लिखा पढ़ी करून कोनी–कोनी मिसड़ा लिखा बूता ने आसत।जिंवटी,मंगरी,बामी,तुरू,चीफा जमाय के झोर साग बनान खातोर होयसे। फेर काय करूंआं आमी? बस्तरेया तो हल्बी के

भुलकलोसे। आरू हल्बी ने गोठेयाले–गोठ बात कर ले लाज लागेसे। आमचो देश चो कोनी धड़ी कोना ले इलो मनुख आपलो दूसर सगा समाज नाहले जाना चीना लोग मनुख के दखते आपलो मांय भासा ने गोठेयाऊआत। मान्तर बस्तरेया के लाज लागेसे हल्बी ने गोठेयाले मान गिरेसे। ये आमचो असिक्छा चो कारन आय। मांय भासा ने गोठेयाले गरब होयसे। आपलो माटी मांय चो मान बाड़ेसे। दखतो बीता आमचो गोठ के सुनुन बलेदे ये बस्तरेया भाई आय ना। आरू आमके जानेदे कि बस्तरेया आय बलते। आमी दूय जन बस्तरेया केबे भेट होऊन हिन्दी नाहले अंगरेजी ने गोठेयाले, अच्छा दखा नी दये। उन मन आमचो छामे नी बलोत मान्तर आमचो मान घटेसे। बस्तरेया होऊन हल्बी नी जानले आपलो मांय भासा के नी मान ले। कितरो लाज आरू सरम चो गोठ आय। ये गोठ के छाती ने हात मडांन बिचार करतो चो बेरा इली से। आमचो ये बे चो लिखतो बेरा ले पूरे खूबे लिखला पड़ला सत उन साहित चो धारा के लिखा पड़ी करते बड़ातो आमचो पुन काम बले आय। आमचो रचना ने आमी सिरप नंदी,ढोड़गी, मुसा,चूटया आरू मंद मांस के चे नी लिखते रहूं। काय काजे की आमी कोनी जाहला नाहले नटवार नुहांव। ये चो ले पूरे जांव साहित चो अनेक बिधा मन आसत उन जमाय बिधा मन ने लिखूं। जेने आमचो हल्बी साहित समरिध होयदे। आमचो साहित चो ढुसी बाड़ेदे। कबिता,कहनी,नानी कहनी, यात्रा बृतांत,नाटक, उपन्यास आदि असने कितरोय आउर बले बिधा आसत जोन ने आमी लिखूक सकूं। आमचो सियान रचनाकार मन के पड़ते जाऊं आरू सीखते जाऊं आरू आमी बले बाट ने हिंडूं लिखते जाऊं।

मोचो गोठ बात ने अई मुर गोठ रली। जमाय पढ़ू लिखू गुनू सियान सजन मन। ये आर धरातो चो मुर पाड़ आय। तुमके कसन लागली मोचो हुच–हुचानी पाड़। मय बले सीखनेया माने आंय। चेतावा,सीखावा, बाट दखावा। मके चिट्ठी लिखा से, वाट्सएप करासे,नाहले परेवां (मोबाइल) आसे चे।

माटी मांय चो किरपा रहो आमी तुमी लिखते रहूं आपलो भासा ने गोठ बात के बाड़ती करूं।

जय जोहार।

तुमचोय–

विश्वनाथ देवांगन
ग्राम–भीरागांव
पोस्ट–बुनागांव
त.+जिला–कोण्डागांव
मो.–7999566755

हल्बी कविता

धरतनी तुचो आय

अकास तुचो आय ।
धरतनी तुचो आय ।
काय काजे तुय डरसित
खुबे मसागत कर ।

जीवना काय आय
खिंडिक घाम
खिंडिक छाँय आय ।
इथा सपाय दिन
एकेच नोहाय
हुनके काय मिरली
मके काय मिरली
ए बिचार के छाडून

सत चो बाट के धर
अछा समया अयदे
धीरज धर ।
सपाय लोग मन के
उदिया बेर ने
जुहार करेंसे।

इन्दराबती के दखा
केबय खुबे बोहेसे
केबय कम बोहेसे
फेर बले लोक मन चो
जीवन दायनी बनेसे

केशकाल घाटी के दखा
कसन टेड़गा मेड़गा
मान्तर लोग मन चो
घरे अमरायसे।

आले चितरकोट के दखा
बस्तर चो सुंदर रूप दखायसे
देश बिदेश ने बस्तर चो मान के
बढ़ायसे

बस्तर चो रान बन के दखा
लोग मन के जीवना चो
पाक फर लेहरा पानी दयेसे

तुय तो भगवान चो अंश आस
तुय कम नो हास
उठ किरिया खा
जितते बिता बन ।

''''''''''

दिनेश कुमार विश्वकर्मा
कोण्डागांव

खजेना.....

मंगली स्कुल चो मास्टरीन मनके दखुन खुबे हरिक हउ आय, स्कूल छुटी दिन भीतरे कोनी नी रलो बेरा लुगा पींदून मास्टरीन बनून दखूआय, असन लागुआय कि मंगली चो मने खूबे पड़तोर आरू नंगत नौकरी करतोर चो बिचार बांदली से।

आज मंगली स्कुल ले इली सिलट झोरा के खुटी ने ओराली आरू बाट डेवना ने उबुन मंडई ले एतोर लोक मन दखेसे। कोनी बोबो, लाई, रसगुला, मिकचर आरू खेलतो जिमिक फुगा, छचमा, पलास्टिक चो नानी–नानी मोटोर मन के धरून जासत, मंगली के तो स्कूल ने गुरूजी बलते रहे तुचो लगे कागत पतर नीहाय कायने पड़से, मंगली बिचार करेसे मय बुबा के खाजा खजेना काजे पैसा नी मांगे, मय पड़तो काजे कागत पतर घेनतो काजे बलेंदे, मय काय खाजा खजेना खांयदे मोचो घरे चाउर नीहाय बुबा भूति ले कमउन कनकी चउर आनले पेट भरत ले भात खाउंदे, मंगली चो मन दखा सियान के बाट नी दये कितरो सुंदर बिचार, बिचारी दखु रहे भुगतली से पीला दिन ले गरीब गुडां पसेया नी फींगा, करिया हांडी चो पंडरा ढींडा। अमली चटनी चरोटा भाजी चो साग, जीवना जीवतोर काजे काय चो लाज।

बुआ आया इला भूति ले मने मने लोक मन के दखुन मंगली के बल दखत आरू मन के मारून कंदरत केबय बले आमचो जीवना माटी डेंगुर आय, छेरी चो नेंगड़ी चार चे अंगूर आय। मंगली हुशियार पीला आय जानली बुआ आया के बलली नी कंदरा ना मके मंडई बुलतोर हरिक नीहाय मके काईं खाजा खजेना नी घेनून दियास, मान्तर मके तुमी पड़तोर काजे कागत पतर घेनून दिया आया, मय बले नंगत पढ़ून भाती मास्टरीन बनुआंय, फेर रोजे खुबे खाजा खजेना खांवां।

आया बुबा चो आंईख ले रद रद आंसू झरेसे, मने मने बलसत आमी बेटी पाउन खुबे धन पाउंलूं, येकय बलूआत भाईग मानी लोक के चे बेटी भाग ने मिरूआय, आज जानलूं महाप्रभु तुमी बेटी साकछात लक्ष्मी आहास, हरिक चो आंसू झरली, मंगली आया बूबा के ऐउन पोटारी होली।

विश्वनाथ देवांगन

आया किरिया

नाव सोनामती बलले सोनामती चे आय, सोन महा(असन) जेचो मती (बिचार) आसे, रोजे दिने चो असन भात खादली आरू पेज तुमा ने धरून सोनामती हरिक मने सवकार चो बेड़ा ने भूति जायसे, बेड़ा ने अमरे बले नाजुन, आरू सवकार ताना मारते चिचयाय से – दखानु कसन लहर लहर अयसे गांव चो सुंदरी छकमको सवकार चो बेटी, इतरो झटके कसन इलीस सोनामती, खिंडीक बेर ले बले तो एतीस। सोनामती चो चेहरा सर ने उतरी, बामन चो मूसा खादलो बराबर चींव नी करे। मने मने खूबे कंदरली से– हे महाप्रभु बेर येबे उदेसे आरू मय बेड़ा बूता ने अमरलेंसे अउर एदांय फेर कितरो संजकारी एउआंय ये पटिंतर चो गोठ ने तो सवसांझे उफड़ा मरना अयदे ये काय हाल चो जीवना होली बूता करते करते बेरा ने इलो ने बले बारा ठान कहनी। मांतर काय करे सोनामती भूति ले मिरलो पैसा ले घरे बुबा काजे ओखी दवई घेनून नेतोर आसे, संगे संगे पड़तो भाई बहिन मन काजे चाउर–कनकी संगे संगे कागत पतर बले हाट दिन आनून देतोर आय। काय करे ओगाय होली आरू बूता ने भीडून गेली। मने बिचार बांदते बांदते कि– ये मसेया सवकार लगे बूता करून करून मय मोचो भाई बहिन मनके आया किरिया खुबे पड़ायेंदे, ये जीवना ने मोचो भाई बहिन केबय नी फंसोत, मय असन बेरा केबय बले एउक नी दयें।

संगे संगे जमाय भूति ने रलो लोग मन के बले सोनामती बलेसे आमी जमाय आपलो घरो जमाय भाई बहिन पीला के पड़ई ने हुसियार बनउं तेबे दिनेक बले डोकरा डोकरी बेरा अस्तिर ने जीवां। नाहले सवकार चो ठेचरना ने बेरा ले लेते मरून जावां, काकय कोनी नी सांगत मान्तर जमाय भूति ने कमातोर लोग मने मने 'आया किरिया सते गोठ आय', आमी तो ये गोठ के मोडरी बांदून सगउ रहूंदे।

भूति ने कमातोर लोक चो बूता होयसे, सवकार चो टोंड डंडिक नी थहरे, काइं ना काइं काकय ना काकय बलते रहेसे, भूति लोक भूति करसत दिन कटेसे...

आया किरिया
एंदाय बिचार दसना उठाय से
कुकड़ा बासली उजर होउक जायसे
मने–मने शीत परायसे
मने–मने बाड़ेसे घाम।
जेबे जेबे अत्याचार उपरापेला
आया किरिया तेबे तेबे होयसे बिहान
।

विश्वनाथ देवांगन

काचा मारना

बुदरू आज बिरबिटाल रिस होलोसे, जेके दखले तेके गारी दयसे। दखलो लोक के बलेसे– 'बस्तरिया तुमी काईं नी करा, पानी बड़ून मरा। चूड़ी पींदून बुला नाहले, कांड धनउ के धरा। नीहाय काईं चो थर, कसन बाड़ती होयसे तुचो बस्तर, लाल बेंदरा बांडा कोलेया मन, फेर भुकर सत, लहूलुहान सासाओड़ा बोहेसे। ये पंडरा मूसा मन चो काय गेली फोकहा फटफटी चेगुन फोबई होला। ढोल भर धान ढोंगहा किरसान। दिन नी पाहली रकत बोहली, कितरो दिन ले ये पटिंतर चो करलानी चो लागा खादलूं से। काचो बदी आय कोन ये बेंदरा मन के उचकाय से चेघाय से कोन राज देश चो ये राजरिहड़ी राहु शनि मन के आनला रबि धुकी बले नीखाय बनबरहा मनके। हाथ चो चूड़ी उजड़ली राखा करू जुवान मन चो जीव गेली केबे ये रकत जीवना मेटून जायदे काचो किरता ने होयसे। पंडरा मुसा मन गद ने गदेया बनासत, आरू पोडरा बेरा चो धान के किरडुन–किरडुन खासत। बस्तर राज चो चीन्हा हाजेसे। बस्तर माटी गागेसे। कितरो दिन अउर ये लागा के छूटतो आय। काचा मरना कितरो दिन आय। बस्तर राज धड़ी कोना नी बाचली से उबागरी मन चो डरानी ने। नदीं डोड़ी चो पानी सुकली। बंदूक चो गरजन ने बन चो जीव जंतुर लुकून गेला, कितरोय के चोरून नीला। ये डरानी चो आड़ ने जीव जन्तुर के बाहरेया मनुख चोरून नेसत। बस्तर चो चिन्हा इता चो रूख राई, लोहा, पानी, गाँव भूंय जमाय के लुकून लूकुन भीतरे भीतरे गरब ने चोरून खासत। आमी बस्तरिया केला कोंदा भकवा लोक, मुरे नी जानूं गरब गोठ। काईं के नीं जानू ना चिन्ता करूं। चेतूं आरू आमचो बस्तर माटी जागारानी चो राखा काजे मने जमाय किरया खांव। कितरो दिन ले आमी नंजर पूरे पूरे दखते रवां ये करलानी रोजे रोजे काचा मरना।'

बुदरू सते गोठ के तो बलेसे, काईं नसतो के नी बले, कितरो दिन ले दखेसे, सुनेसे बाहरेया लोक चो ठेचरना। बस्तरिया लोक भकवा लोक। आमी मति ने आरू सुतुर होउन, किरिया खांउं, येदांय करूं ये कोन दिन चो लागा चो भरना। पुइतने मेटो येदांय ये काचा मरना।

विश्वनाथ देवांगन

सगनाहा

जीवना चो गीद नी करा कोनी जीद, केबय मिरूआय दार भात केबय चूचाय पानी, उपरबीता देव लोक चो महेमा के नीहोय जानी।

भीता भर चो पेट मान्तर जायसे ठिया ठेट, समया समया चो भाव ने बिलई बाग होयसे गांव ने। बिचरंगा बुदरू भूक हउ रहे, पेट काजे काय करे, सवकार चो बेटा चो लाई चना के खातो के दखलो, लालच ने इजीक लगे सरक खिंडिक सरक सरकुन लगे अमरलो, बाट रेटे बसुन गिरलो लाई मन के बेचून बेचून खायसे, फेर दखेसे हारेक एबाट उन बाट फेर बेचेसे फेर खायसे, मसेया सवकार चो पीला नंगत मया करू आय, पीला लोक काय जाने पीला लोक भगवान माने,सवकार चो नी दखतो बेरा फेर फेकून दयसे इजीक लाई चना के। लेका सवकार चो डर काजे नंजर लुकातो खायसे काय करे भीता भर चो पेट के भरतो बले तो आय, फेकलो लाई कितरो पेट भरूआय मान्तर काय करे गरीब गुडां लोक। काम बूता मीरे नहीं आया बूबा खमना ने लकड़ी काजे गेला बीकून भांजून कनकी चउर आनले पेट भरत ले भात खादे नाहले राती भूके सवतो। सवकार चो नंजर पड़ली बुदरू चो लाई के बेचून खातो लगे हुता कहां सवकार बाग असन घोगललो – 'ये के कोन दाना दिलास ना इता बाटे लागा धरूक बसलोसे सगनाहा, ये के खेदा इता ले, ये लगे दखा देतोर नुहाय मके।'

बुदरू दादी चो गोठ के सुरता करते मने अफारते जायसे। सते बलूआय दादी कहका आसे दागा बड़े की हागा बड़े, हागा चे बड़े ना, मान्तर आज दागा बड़े होली, बुदरू डर काजे परालो बिचारा मने मने खूबे कंदरते बिचार करते जाये, गरीब होतोर बले कोनी दिन चो पाप करलो चे आय ना, नाहले फेर लहू गोटकी आय, उनी चाउर चो भात के सवकार भूतियार दूनों खाउंसे, फेर गोरोस तो नी फूटे काचोय देंहें ले, कसन ने तेबे मय सगनाहा होलें,

धन से तकदीर, फूटहा करम, राज चो धन के ठगुक खाउ सवकार नंगत माने, राती दिने बूता करूं मय होलें सगनाहा।

विश्वनाथ देवांगन

एनकू दादा

उर्मिला आचार्य
पंचरास्ता चौक
जगदलपुर–494001
मो.–9575665624

ये गांव चो लोग हुन्ह गांव गेलो। हुन्ह गांव चो लोग ये गांव इलो।

असनी गोटोक दिन सात गाव चो आगर दादा एनकू इन इलो। एनकू दादा सुनार आये। रूनझून बाजली। संगे इलो ताजी–तबाली बाजली सोना, रूपा, सुमरी नंदी–पहाड़ जितलो। एउन–एउन भाटा थाने अमरलो। दखलो–काय सुंदर सोरसों फूल....हाय अब्बड़ सुंदर...। हरिख आने उठलो हाय–हाय मोचो सोनार फूल मिरलो। लहरा आने काय सुंदर लहरालो। हरदी असन, सोना असन दखली।

मान्तर सुनर फूल काय आने नयेन्दे झोता नाई, थान नाई, काय आने नयेन्दे। 'एनकू चो दुविधा दखेदे सोनार फूल बलली– रहा–रहा दादा अबे माली आएन्दे, झोला थाने संगाएन्दे।

सोनार फूल चो गोठ के सुनी एनकू दादा गाले हाथ दिले। 'रूख, पतर बले गोठान्दे जानी एनकू गाले हाथ दिली।' फेर सोरसो फूल ने सांगले–'मुई सतरा घरे जाएन्दे, पेज पसिया खाएन्दे अऊर सोनर फूल तुके नएन्दे।

एनकू दादा सतरा घरे भाबुन भाबुन गिले–मुई कसन–कसन गहना बनाउन्दे–कान चो बाली, हाथ चूड़ी, बाहटा, टोटी चो सरसो माला, नाक चो फूली जम्माय बनाएन्दे, गोड़ चो पैडी, ए कसन बनाएन्दे रूपा.....। रूपा कोनती आनेदे।

रेंगते–रेंगते भाबुन भाबुन बेर बुड़ला। घामे ने भूख लागली, चुआ चो पानी पीएन्दे आवरी तोरी खाएन्दे। हाय... काय मीठ ागली। हाय–काय मीठ लागली...।

रूख लगे बस करी देखेन्दे कचरा थाने कानी बाटे टेमरू छाती मिरती फूट्टू डून्दी मिरली पंडरी–पंडरी दिखली। रूपा डगराय–डगराय पंडरी–पंडरी दिखली। हाय काय मजा इलीरे हाय मजा इली रे....।

रूपा असन ढुंढी के पयड़ी और बाहटा बनान्दे।'' एनकू के खुबे हरिख लागली।

फेर सतरा घरे खाऊन आसी इलो सोनरे फूल अऊर टेमरू ढूंढी के झोला ने भरली। मऊआ रूख तरे बसी करे ताजी–तवालो काडलो फेर कान चो फूल नाक चो लवंग ढ़लो। फेर हुन्ही ने पयड़ी अऊ बाहटा गढ़ली।

एनकू दाद हरिख आने उठलो गांव चोपाल लगे बसलो। कोनी खोसा ने नीलो कोनी जुड़ा थाने नीलो कोनी पयड़ी रखलो।

काय सुनदर गहना.....जनमन के

हरिख लागली। एक जोड़ी करनफूल नाक चो लवंग गोड़क पयड़ी अऊरी बाहटा एनकू बायले बिती काजे लुकाय करी संगाली।

हरिख–हरिख एनकू दादा सोनर फूल अऊर फूटू दुड़ी चो नाव गुनी–गुनी अपन गांव गेली।

छ गांव देऊन भाति अपन गांव अमरली। गहन बिकुन–बिकुन भाति रूपिया पइसा गांजा आने भरली।

रूपिया पइसा ने अऊर गहना बनाऊन बिकली अऊर खुबे पइसा कमाइली।

सपना दखी –दखी सोचली–सुनर फूल टेमरू सावन ढुंढी तुमी आमके खूबे साकार बनाली।

''सोनर फूल, टेमरू छाती'' मोके सावकार बनाली।

वंदना गीत

मांय दन्तेशरी चो वंदना

महेश पांडे
शीतलापारा
कोण्डागांव
मो.–9406151650

मांय दन्तेशरी तुमके अरज करूंसे।
आया रे....आशीद हमके देस।।
तुमी माता मावली तुमी हिंगलाजीन।
तुमी सितला रेवागड़िन तुमी पेन्डरावन्डीन।।
हामी लोलो बालो तुमचो कोरा ने बसलूंसे।
हामी दुख दण्ड के जानूं नई हांसलूंसे।।
आया रे....

नंदी डोंगरी करपन घाटी ने आसे तुमचो बास।
भैरम भीमा कुंवर लिंगो बूढ़ा तुमी आस।।
आंगा डॏी लाठ गपली मांय तुमचो दतर।
ओल्की कोल्की जोत जलेसे मांय तुचो बसतर।।
आया रे.....

बाजा बाजेसे नंगाड़ा मोहरी अरू ढोल निशान।
सेवाकारी सेवा गावसत आया सांझे बिहान।।
खेलून कूदून हांसी ठट्ठा ने चलेसे मांय जीवना।
अरज इतरो करूंसे मांय झूलते रहा झूलना।।
आया रे.....

हल्बी कविता

चितरकोट मंडई

जाउन रले बुलतो काजे चितरकोट मंडई
हाट ने दखली मुय बायले मन चो लड़ई।
बस्तर चो बोड़ा, फूटू, बास्ता ओरी कांदा
मोके झांय झांय लागसी चापड़ा संगे लांदा।
दखा ना दे आजीकाली पंडकी, कांवा, चिड़ई
जाउन रले बुलतो काजे चितरकोट मंडई।
झरना खाले ठिंया होउन फोटो झिकलू सेल्फी
खूब ठोकली चिपड़ी भरून भरून सल्फी।
मंडई मेला ने भेंट होली मामा ओरी भांचा
आसा री लेकी मन आमर संगे नाचा।
हाट ने धरली मय थोड़े असन आलू
बाट ने दखलू मय माचकोटिया भालू।
जाउन रले बुलता काजे चितरकोट मंडई
हाट ने दखलू मय बायले मन चो लड़ई।

सूरज नारायण
फ्रेजरपुर,
जगदलपुर–494001
जिला–बस्तर
मो–8962688702

देशवती कौशिक
मसोरा, कोण्डागांव
मो–8962688702

रूख बलसे

हे माने तुमी मके नी गोंधा, रूख बलसे
तुमी गोंधासित मचो, जीव करलसे
तुमचोय असन मचो लगे, बले जीव आसे
तुमचो टयेंगा धरून, एतो के दुखन मय डरेंसे
हे माने! तुमी कसन भूलकासित
मय आंसे तेबे तुचो जीव आयसे,
तुम गोंधासित मचो, जीव करलसे
मके नी गोंधा मय, तुमचो पांय पड़ेंसे
अबे गोंधासित पाछे तुमी च पसतावासे
सुरता करा थकुन एवुन, मचो छांयें ने बसासित
थकलासित बलून मय, तुमके लेहरा दयेंसे
तुमी...गोंधासित... मचो
मय तुमके, पान फूल फर दयेंसे
तेबले बले तुमी मचो, बयरी होलासित
आपलो लालच काजे, मके गोंधासित
हे माने मके नी गोंधा ,तुमके लेहरा पानी दयेंसे
तुमी.. गोंधासित.. मचो..जीव करलसे

हल्बी कविता

पीला बेरा चो समया

बुलतूँ संगवारी मन संग खमना ने.
चिपटी ने नोन मिरी गोंदरी आउर तुमा ने,
काय मंजा सित्तर,मँडया–गहुँ चो पेज धरुन.
पान, दतुन, बोड़ा, कोसा,धूप खोजतूँ.
चार,चड़इ जाम खातूँ,
रुक ले टोड़ुन टोड़ुन.
पीला बेरा चो समया,
फेरे एती बने बोहड़ुन.

खमन चो बाँस्ता, बोहार,पेंग भाजी,
मेटुआत आमचो भूक.
आमचो जीवना आत ए टेमरू,सरगी,सिवना,साहजा,
आउर कएक किसम चो रुक.
लमहा पाटे परातूँ, रामी–पंडकी धरतूँ.
आनतूँ आमि आपलो घरे,
पीता कांदा खोड़ुन.
पीला बेरा चो समया,
फेरे एती बने बोहड़ुन.

माय बाप जे के नी करा बलता हुनके करतूँ.
आमि काकय फेर काय काज डरतूँ.
नंदी ढोड़ी में दिन भर ढोपकतूँ.
मसरी, केकड़ा,घोंघा धरतूँ.
बरसा पानी ने छम छम नाचतूँ,
साता, सत्तोड़ी ओड़ुन.
पीला बेरा चो समया,
फेरे एती बने बोहड़ुन.

मिरती फेर आया चो कोरा.
जुहातूँ बुलुन–बुलुन सरगी,महु,टोरा.
नानी–नानी पाँय ने हींडते बाटे–बाट.
जातूँ बिहाव,सगा, मंडई,हाट.
नांगर,आँगा,गाड़ी बनातूँ,
लकड़ी जोड़ुन जोड़ुन.
पीला बेरा चो समया,
फेरे एती बने बोहड़ुन.

अशोक नेताम
बस्तरिया
कोंडागांव छ.ग.
मो.–9407914158

शराबबंदी पर शराबियों का चिंतन

वीरेन्द्र देवांगन
आनंद विहार कॉलोनी,
फेस–1
ब्लॉक–ए, फ्लेट नं. 403
बोरसी, दुर्ग छ.ग.
मो.–9406644012

वे रोजाना पीते थे। बगैर पिए उनका हाथ–पॉव कांपता था। भोजन अपचा रह जाता था। नींद नहीं आती थी। दिल, दिमाग और जुबान का तालमेल बिगड़ जाता था।

यहॉ तक कि मद्यरूपी जीवनामृत नहीं मिलने पर उन्हें बेहोशी के दौरे पड़ते थे। इस बीच 'दो बूंद जिंदगी की' मिल जाता था, तो भले–चंगे हो जाते थे।

कहीं जाते थे, तो वे अपने साथ प्राणप्रिय दारू की 'बोतल' साथ ले जाना नहीं भूलते थे। जब खत्म हो जाता थी, तब लोकल ब्रांड ढूंढ़ते थे या दारू अड्डे भागे चले जाते थे।

उन्हें उनके परिजन समझाकर हार चुके थे या कहो कि शराब पी–पीकर उन्होंने परिजनों को हरा दिया था।

समझाने पर वे सुबह कसम खाते थे, शाम को तोड़ते थे। इसके लिए उनके पास ढेरों बहाने रेडीमेड में ऐसे मौजूद रहते थे, जैसे हारे हुए नेता के पास रहते हैं। दारूखोरी की बहानेबाजी में उनका कोई सानी नहीं था। यदि बहानेबाजी की प्रतियोगिता या ओलंपिक होता, तो उन्हीं की तूती बोलती, इतना तय था।

वे दो थे। उनमें गाढ़ी छनती थी। बिल्कुल दांत काटी रोटी की मानिंद।वे साथ–साथ पढ़े थे और आठवीं बोर्ड में फेल हो जाने से स्कूल छोड़कर कभी गॉव में, तो कभी शहर में कुली–मजूरी कर अपना व अपने लोगों का पेट पाल रहे थे।

उनमें से एक, जिसका नाम कल्लू था, दिल की गहराई से बीड़ी के बुझे हुए ठूँठ को "फूंक–फूंक" कर पीते हुए लगी–लाग में अफसोस जताया, "अमा यार, जब शराबबंदी पूरी तरह हो जाएगी, तब कहॉ से जुगाड़ेंगे शराब? शराबबंद होने से उनका जीना, मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन वैसे ही हो जाएगा, जैसे डॉन को पकड़ना, मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। कल ही दो घंटे के लिए दारू नहीं मिला, तो कॅपकॅपी छूट रही थी; दिमाग फ्यूज हो गया था। बत्ती गुल हो गई थी।"

कल्लू से इत्तफाक रखते हुए लंगोटिया यार बल्लू बोला, "सचमुच मरण हो जाएगा, यार। हम जल बिन मछली की तरह तड़प उठेंगे। सरकार! कुछ तो रहम करो ? हे भगवान! सरकार को सदबुद्धि दे?"

वह हाथ ऊपर उठाकर भगवान की स्तुति किया, "हम जैसे लोगों को पीने–पिलाने का लायसेंस दे सरकार। ऐसे में तो हमको टपकते देर नहीं लगेगी। वह चाहे तो पीनेवालों का सर्वे करा ले कि कौन–कौन हैं आदी। फिर

उन्हें उम्र और डोज के मुताबिक पीने की छूट दे।''

"और नही ंतो क्या?"इस पर कल्लू सहमति जताते हुए बोला,"मैं जो सोच रहा हूॅं क्या तू भी वही सोच रहा है बल्लू?''

''तू क्या सोच रहा है। पहले यह तो पता चले, फिर अपनी बताउंगा।'' बल्लू प्रत्युत्तर दिया, तो उसके उत्तर से संतुष्ट होते हुए कल्लू ने तरकीब सुझायी,''मैं सोच रहा हूॅं कि शराबबंदी की घोषणा के पूर्व घर की चीजें गिरवी रखकर एकाध पेटी अंग्रेजी ले आते हैं। चार–छह माह तो निश्ंिचतता से ''टुन्न'' रहने को मिलेगा।''

''तू बड़ा भोला है रे कल्लू।'' बल्लू एक बड़ा पेग उड़ाते हुए दलील पेश किया,''ये अंग्रेजी विजय माल्या जैसे उन बेईमानों के लिए है, जो दोनों हाथों से बेईमानी कर या तो घर भर रहे हैं या विदेश भाग रहे हैं। ऐसे लोगों के पास कपटचारी व मक्कारी का पैसा भरा है, इसलिए महंगा पीते हैं। हम मजदूर विदेशी क्या देशी भी मुश्किल से जुगाड़ पाते हैं रे?''

जिस बिचौलिए के पिछवाड़े में ये दोनों अक्खड़ पियक्कड़ गम गलत कर रहे थे; उसकी मालकिन उनकी बातें ध्यान से सुन रही थी। उससे रहा नही गया। वह उनकी परेशानी को दूर करने के मकसद से स्थानीय हल्बी बोली में बोली,''ठौंका गोठयाय सहास तुमन दादामन। आमचो रहत ले तुमन काईं गोठ काजे फिकर नी करा नू। आमन आसू तुमचो काजे। सरकार लाख कोशिश कर ले, आमन आपलो ध ांघापानी के बुढ़ाउन पिला–झीला के मारूॅंदे काय।''

''अच्छा...छा...छा!'' वे दोनों सहसा सिर उठाकर उस बिचौलिया औरत को देखने लगे, जो आशा की किरण बनकर उभरी थी। वे चकित थे कि वह औरत होकर भी हिम्मत दिखा रही है। कल्लू हैरत से हल्बी बोली में पूछा,''तुमन कोन बाट ले जुगाड़ करासे दीदी? सब बाट तो नाकाबंदी रहेदे।''

''हुनचो उबाट आमचो लगे आसे जानू। 'मंद' के बंद करतो नियम शहर–गांव ने रहेदे। मांतर रान बाटे नी रहें। रान चो ''फूली'' मंद आमचो लग अमरेदे। आमी उनके ''राशि'' बनाउन तुमनके चखाउॅंदे।'' बिचौलिया औरत बेतकल्लुफी से हल्बी बोली में जवाब दी, तो दोनों शराबी हैरत से मुंह फाड़कर एक–दूजे का मुॅंह देखने लगे, गोया उनको विकल्प मिल गया हो। यह औरत उनके लिए फरिश्ता बनकर आ गई हो।

उन्हें लगा कि उनका चिंतन सार्थक हो गया है। अब चिंता की कोई बात नहीं। वे उठकर बांहों में बांहे डालकर झूमने–गाने लगे और हल्बी बोली में गाने लगे कि ''ऐदांय फिकर नॉट। फिकर नॉट। हामी जाउॅंसे, आपलो बाट। आपलो बाट।''

बेर उदली

गांव चो मुखिया सवकार, मंदहा के बलूआत मतवार, गरीब चो काइं चिन्हा नहीं, काचोय पेट ने बाना नहीं, फेर करम कमई आपलो मांय चो ना बाप चो, जे दिन ले चिपड़ी धरूक सीकलो घर नरक होली, सांगले कहनी, कोन दयसे बनी।

मतवार बुदरू रोजे बूता के झांडून झांडून कुकड़ा हाट बाटे जायसे होड़ खेलूक मान्तर बुदरू नी जाने कि आजी असन होयदे कुकड़ा हाट ने होड़ ने जीतुक की हारूक, कितरोय साल होली मान्तर केबय असन नी हउ रली। बिधि चो बिधान के पाहटेया ने चेतलो किसान के कोन जानुक सकेसे, आज खुबे गोठ नसली, रोजे दिन चो लालच आज फंसली। ढुसी से धान के चोरून लुकुन नीलो आरू मसेया सवकार लगे बीकलो जोग दखा नसतो बेरा चो बारा ठान कया जसन लेका लेकी चो मया। फेर आजी होड़ ने पैसा के हारून गेलो, मुंड के थापुन गागलो, आपलो गलती के बिचारून बिचारून आंसू के थेबाउक नी सके, काय करसे रिस काजे थर थरे, बिगर बल चो काय करे। लालच चो घर हाना, काय करे, रिपोट लिखाले ठाना। बेमार आया चो दवई–दारु पीला मन चो सिलट–पिंगसिल पेट काजे चाउर–कनकी काके सांगे जीव चो करलई के कंदरून–

कंदरून कदरई होउन आपलो उपरे रिस होयसे ये काय फांदा ने फंसालीस भगवान महाप्रभु! एदायं मय कसन करूं आंय, हारेक तो जीताउन देउ रतीस। जीवना चो मुर गुपली, जमाय रूपया के तो हारलें कुकड़ा होड़ ने। आया किरिया माटी किरिया आज ले मय ये फांदा ने नी फंसे, कुकड़ा होड़ नी खेलें। असन बिचार बांदते मसेया सवकार लगे बोरा बोहतो हमाल बूता ने तुरते गेलो, सते गोठ आय छुचाय हात जाइ नीहोय लाफी दूर, दखा देउ आय तीन लोक तीनोंपुर। घर दुआर चो किरता ने सवकार लगे बूता करलो रूपेया ने चाउर कनकी आरू गुबी ढेटा खिडींक बंगुला धरून मुसुक ने घरे इलो। गोठ के लोक चो मन जानतोर चीतातोर काजे कांई बेरा नी लागली। आजी बुदरू बिगर सोर चो मातुन जीतलो कुकड़ा संगे झोरा भर साग भाजी, झिल्ली भर चापालाडू, चरबन, भजिया, काईं नी आनलो मान्तर बुदरू चो कोमलो थोतना के दखुन सब काईं नी बलत। आजी कोन मांई चो किरपा होली सांज बेरा बेर उदली। काकय काईं बले नहीं काचा किड़ला रादूंन देतो के खादलो आरू चुमुक ने सवलो बुदरू। घर चो लोग अस्तीर ने सवला आज दीयारी दिन असन लागली जमा चो मन ने भीतरे भीतरे हरिक उदिम चो बाजा मोहरी बाजेसे। पहटेया ने नांगर बाटे गेलो आरू येउन भाती

पेज पीउन आज बुदरू केबे बूता ने नी जाउ मातून रहू मतवार मसेया सवकार लगे बूता ने रेंगलो। आजी सते बेर उदली।

विश्वनाथ देवांगन

हल्बी कविता

बेटी

बेटी जेबे जनम धरली,
पारा गुड़ा उदिम होली...
थुमुक–थामक हिंडुक सिकली,
हिंडा बुला के हुनचो गांव दखली।
बस्तर चो तुय बेटी,
घर चो पुरखा आरू गांव चो माटी
घर के सरग बनाऊ आय,
गांव शहर के सुंदर बानाऊ आय,
परिवार चलाऊ आय।
सतरा–सतरी चो सेवा संगे
आया–बुबा चो सेवा करुआय
सवसार ने नाव कमाऊ आय।
आया चो लाडरी बाबा चो लाडरी,
गोटक घर ले दुसर घर जाऊ आय
बेटी मया चो डोर बान्धुआय।
बेटी मारा से बेटा बचावा से,
बेटा काजे बोहारी काहा ले पावा से
बेटी के बचावां, बेटी के पढ़ावां
सवसार ने नांव कमावां।

गणेश मानिकपुरी
जोबा कोंडागांव

हल्बी कविता

बस्तरिया साग भाजी

ऐ ना ऐ बाबू बुदरू।
कसने होओ सुदरूं।।
मंद लांदा के छांडून।
भात खांवा रादुंन।।
भाजी संगे झुंड़गा।
सुकसी चो पुड़गा।।
नी लागे ना चाखना।
लेकी चो बाबा दख ना।।
बांगा साग ढेटा–ढेटा।
भाजी नंगत चरोटा।।
ऐ ना ऐ बाबू सोमारू।
साग खावां ना कुन्दरु।।
गोंदरी भाजी लसलसा।
मुंनगा साग सुवाद रसा ।।
कुमडा भाजी खसखसा।
केभय नी करूं ना निसा।।
साग नंगत कड़वाड़ी।
उड़ीद बुनुआं बाड़ी।।
हरवां दार चो साग दादा।
फनस फरूआय खंदा।।
डोकरा–डोकरी येके आनुन।
कायमंजा खांवा रादुंन।।

केशर चंद पुजारी
बड़ेडोंगर

हल्बी कविता

भितरे बांदा

गोटोक अचरीत दखलुं रे दादा
जीव जनावर हरिक होला
मनुख होला भितरे बांदा।।

धन चो लालच ने होलु आमी भैरा–आंधा
मांगुन खातोर बिता लग मोटोर–गाड़ी
कमाउन खातोर बिता लग निहाय रांधा।।

रुख–राई के गोंदलु, होली पानी लेहरा चो बाधा।
मोटोर–गाड़ी अरू कारखाना ले कारीबादरी खादा–खादा।
लॉकडाऊन चो समया ईली जीवना होली सादा–सादा।।

पुलीस बिता आरू स्वास्थ्य कार्यकर्ता के नी करा बाधा।
बेमारी ले जमाय मरूंआ राज होयदे पादा–पादा।
मुर गुपली अमरीका चो जेन रलो दुनिया चो बाबा।।

आया दन्तेशरी चो किरपा दखा, बस्तर ने नि फसली से बाधा।
लाफी–लाफी रहुं जमाय धरून मुहबांधा।
कितरो छुत बेमार, आय ये चायना चो फाँदा।।

गोटोक अचरीत दखलुं रे दादा
जीव जनावर हरिक होला
मनुख होला भीतरे बांदा।।

गिरिजा प्रसाद पाण्डे
सातगाँव(कोण्डागाँव)

हल्बी कविता

मया करेंसे

मैं तुचो दीवाना आँय मया करेंसे।
सुरता करुन तुके मैं बया होलेंसे।
स्नु पाउडर लगातो,
मुचुक– मुचुक हासतो तुचो, खूबे बायेसे।
नाक चो नथनी,
कान चो बाली तुचो, खूबे पोबेसे।
पानी गेलोने, बेड़ा गेलोने,
उलटुन पलटुन दखेंसे,
कहँय गेलोने ऐतोके तुचो, बाट दखेंसे।
मैं तुचो दीवाना आँय, मया करेंसे।

आया के बले सांगेंदे,
बाबा के बले सांगेंदे,
मन करले तुय मके माहला पटायेंदे।
चितरकोट घूमर अउ तीरथगढ़ दखायेंदे,
लाल पलसर ने मैं तुके बुलायेंदे।
सुरता ईलो मैं तुचो फोटो के दखेंदे।
मन नी मान लेक मोबाईल में फोन लगायेंदे।
तुचो मचो जोड़ी खूबे सबके पोबेसे,
मै तुचो दीवाना आँय मया करेंसे।

सुरता अयसे शाँझ– बिहाने,
मचो दिल में डेरा बनालिस,
खाऊक नी होय सोऊक,
तुय मके बया बनालीस।
सजुन–धजुन बेनी हलाउन तुय निकरसीत,
संसार चो रूप रानी असन दखसीत।
जन्म –जन्म ले पावतो काजे तुके सपना दखेंसे।
मैं तुचो दीवाना आँय मया करेंसे।

.

सनत सोरी
कोयतुर

हल्बी कविता

अकतई

सुंदर दिन आज इली,
सियान सजन के मन भावली।
इली इली अकतइ तिहार इली।1।

बड़े बिहान मिलून भाटी, गेलू नन्दी बाट।
पितर लोग के गुहराउन भाती, टिकलु चाउर संगे तीली।
इली इली अकतई तिहार इली।2।

काय मंजा आमा खापुन बनालू हुन के कूचा।
फरसा पान के जोंगुन भाटी, बनालू हामी डोबली।
इली इली अकतई तिहार इली।3।

जाम डारा के गुड़ा बनाउन, करलू हामी गुहार।
चार, आमा संग आसे गुड़ चो भेली।
इली इली अकतई तिहार इली।4।

रोसई चाउर जोड़ून भाती दिलु सगा मन के।
पना, रोटी खाऊन भाती सबके मन के भावली।
इली इली अकतई तिहार इली।5।

सियान धियान के सुमरलू, करलू सबके जुहार।
किसान दादा बल धान निकरालो दुइ गपली।
इली इली ,अकतई तिहरा इली।।6।।

डी.राज सेठिया
बनियागांव, कोंडागांव

हल्बी कविता

बलले बडे अकल

राने गोटोक बाघ... रये,
सब जीव के डराऊन खाए।
गोटक दिने प्यास काजे,
लकर लकर पानी खोजे।
मंजी राने रये मुंडा,
मुंडा ने रये.... कचिम,
मुंडा हिरी ने सोऊन रये।
बाघ मुंडा के दखुन हाय करलो,
पिवलो पानी रांय करलो।
मारलो छलांग धरलो कचिम,
धरलो टोंढे निलो राने
कचिम चो चाल के नाजुन जाने
रुख छायें धरुन निलो।
खायेदें बलुन हरिक होलो,
चाबुन धखलो पखना असन,
बिचार करलो खायेदें कसन।
कचिम बललो थेब ता राजा,
पानी पुलावउन पाछे खा।
धरुन निलो मुंडा ने,
पुलायउन खायेदें बलुन।
कचिम बाघचो गोठ के सुने मुंडी लुकाउन।
बाघ कचिम... के धरुन निलो,
मुंडा भितरे बुडाउन दिलो।
कचिम चो जीव हाय करली,
खायेदें बलुन टामढूंन दखलो,
कचिम छुटेराम करलो।
बाघ कचिम चो ढेटा के धरलो।।
तेबे तो बलुआत बल ले बडे अकल..।

पुरुषोत्तम पोयाम
हीरापुर (माकडी)

— पडा—लिका —

पडा लिका
अरू
लिका पडा
लगे जानू
ईसकूल आसे ।

अदायं तो
मुबाईल ने
बले
पडा—लिका
सीकसत ।

सरकार चो
नवा उवाट
पडई तुअर
दुआर
खूब सुनदर ।

ए गोट के
सपाय समजा
पिला—जिला के
नगत सीकावा
देस के सुदरावा ।

हितेन्द्र कोण्डागंया

हल्बी कविता

जीवना दुय दिन चो हाट

अवधरम के छाँड तुय, धर धरम चो बाट.
जीवना दुय दिन चो हाट, जीवना दुय दिन चो हाट.
    गोदी खनला–बनी गेला, दुखा धराला हाथ–पाँय के.
    सेवा करा हुनमन चो, नी भुलका बाप–माय के.
नी सरे काँई तुमचो, खरचा नी होय नोट.
जमाय आँव भाइ–भाइ, हाँसुन गोटयाव गोट.
    मया चो सूत ने बाँध सबके, भरम चो डोरी के काट.
    जीवना दुय दिन चो हाट, जीवना दुय दिन चो हाट.
आपुन के लाट साहब, नानी नि समज तुय आउर के.
पियेसे कोनी पेज–पसया, तुय बले खासित हुनि चाउर के.
    बड़े नी होय कोनी मनुक, रुपया–पयसा गाड़ी ने.
    सन्तोस रलोने सुक मिरेसे, डारा पाना चो लाड़ी ने.
मिलुन रा सबाय संग, नानी बड़े चो खोदरा के पाट.
जीवना दुय दिन चो हाट, जीवना दुय दिन चो हाट.
    सवकार हवो कितरोय कोनी, कोनी रहो बे कमया.
    पराते जायसे थेबे नइ केबय, काचोय काजे समया.
माटी आय देंह आमचो, कोनी दिन बले माटी होयदे.
नी रहेदे ए काँई काम चो, भुँय खाले पाटी होयदे.
    कितरोय लाम रहो बे राति, सरुन चे जायसे नाट.
    जीवना दुय दिन चो हाट, जीवना दुय दिन चो हाट.

अशोक कुमार नेताम
केरावाही (कोण्डागाँव)

हल्बी कविता

भुतयार

मंय भुतयार आंय
मसागत करून खंयसे,
कुटुम संगे
हरिक ने रहेंसे।
मंय मसागत करेंसे
मसागत चो खांयसे
मके कांइ सकुक निहाय
गाड़ी–घोड़ा, रूपया–पैसा
मांतर,
पिला मनके पड़ांयसे,
दुई पहार काजे भात,
देंहे काजे कपड़ा
काचोय पुरे भिक नी मांगे।
नानी असन टुटतो कुड़िया
मचो छानी आय सरग,
डसना आय धरती माय
सीत घाम चमास
मचो संगवारी,
एई मन संगे
हरिक ने जियेंसे।
गुलाय मंझन पसना थिपांयसे
थाकुन फुटुन
राति मन भर सोयेंसे
मय ळ्ुतियार आंय।

नरेन्द्र पाढ़ी
रहमान गली,
पथरागुड़ा, जगदलपुर
जिला–बस्तर
पिन–494001
मो.–9425536514

हल्बी चो शब्द मन

मोटरसाइकिल – फटफटी
मुर्गा – कुकड़ा
मुर्गी – कुकडी़
बोकड़ा – बकरा
कुकुर – कुता
बिलई – बिल्ली
मूसा– चूहा
बेंदरा – बंदर
कोयकी – तोता
कोयली – कोयल
चटेया – गौरेया
कुरवां – उल्लू
करेया– काला
पंडरी – सफेद
कबरी – चितकबरा
बोरबोटी – बरबटी
लाऊ – लौकी

हल्बी कविता

रान बन के नी गोंदा

फल दयसे पान दयसे,
दयसे आमके पानी।
रान बन के नी गोंदा,
आमके होयसे हानि ।।

खमना खूबे रले दादा,
राज ने खूबे पानी गिरेदे।
चार महू बेहड़ा शिवना,
आमके जमाय खाऊक मिरेदे।
आमा दयसे अमली दयसे,
दयसे आमके बन चो रानी।

बन ने नाचत लम्हा कोडरी,
हरिक मन ने बोहूक भाती आंगा।
आमचो रान बन आमचो जीवना,
असन हरिक उदिम करून दादा।
चड़ई चिंड़गुड़ कितरो सुंदर,
सुंदर कोयली रानी।

बिहा बर होले दादा,
जमाय जीमीक आमचो बन।
बन आमचो जीवना आरू,
बन आमचो धन।
कांदा कूली दयसे दीदी,
दयसे लेहरा पानी ।

सिरसीकरीन 'सायबो' दीदी,
बास्तानारीन 'मनकी' बाई।
महु काजे नी जरावा,
गुलाय बन के रांई छाईं।
चार नयसे महू नयसे,
नयसे बीकूक 'मंगली' नोनी।

बन बस्तर रिसाली गुने,
डेरा पड़ला 'लाल' कोलेया।
बस्तर माटी चो रस ने,
बनाला आमके डोम ओड़ेया।
बन के अइग नीधराले,
बन के दाड़दूड़ नी गोंदले,
हरिक होयदे बन चो रानी ।

विश्वनाथ देवांगन
कोंडागांव(बस्तर)छत्तीसगढ़

नाग राजा चो गुड़ी

नाग राजा मन बस्तर ने नव सौ साल पाछे राज करते रला। हुन बेरा आली पाली के चक्रकोट बलते रहोत। ये मन चो राजधानी बारसूर में रली, पाछे ये मन नारायणपाल लगे राज करते रहोत। ये मन बेरा चो बनालो बिति गुड़ी, मुर्ति आऊर राजमहल चो बाचलो पखना मन लोहण्डीगुड़ा लगे इन्द्रावती आऊर नारंगी नदी चो कठा–कठा आऊर आली पाली एबले आसे।

नारायणपाल–लोहण्ड़ीगुड़ा लगे नारायणपाल गांव ने 905 साल पाछे नाग राजा मन गोटोक गुड़ी के बनाऊ रला, हुन गुड़ी इतरो दिन होली तेबले बले असने आसे। गुड़ी चो भीतरे गोटोक षीला ने खुदाई करून लिखलो आसे–छिंदक बस चो नाग राजा सोमेष्वर देव येथा खुब दिने राज कर लो। सोमेष्वर देव चो मरलो पाछे हुन चो बेटा कन्हरदेव राजगद्दी ने बसलो। सोमेष्वर देव चो आया गुंडमहादेवी खूब पूजा पाठ करतो बिति रहे आऊर भगवान के मानते रहे। हुन बलली मचो नाती कन्हरदेव राजा बनलो से हुन चो राज पाट नंगत चलो आऊर येथा चो लोगमन हरीक–उदीम ने रहोत बलते नारायणपाल गांव मे सन् 1111 ई. ने पखना चो बड़े असन गुड़ी बनाऊक बलली आऊर गुड़ी ने विश्णु भगवान चो मूर्ति के मंडाउन भाति पूजा पाठ कराउ रहे। हुन बेरा चो बनालो बिति गुड़ी 905 साल होली तेबले बले जसन चो हुसन आसे। ये गुड़ी के दखूक लाय आलीपाली चो लोग मन एथा एसत।

शिव शंकर कुटारे
ग्राम–बड़े धाराउर
तहसील लौहण्डीगुड़ा
जिला–बस्तर छ.ग.
मो.–9406294695

गढ़बोदरा–इन्द्रावती आऊर नारंगी नदी जोड़ियान चो मंझीगता गढ़बोदरा गांव आसे। येथा नाग राजा महल चो पखना मन खुब दिन ले रली। येथा नाग राजा मधुरान्तक देव चो गढ़ रहे बलसत। राजा आपलो रक्षा काजे दुनो नदी चो मझीगता आपलो महल के बनाऊ रहे।

कुरूशपाल टेमरा राजपुर– नारायणपाल गांव लगे कुरूशाल,टेमरा आऊर राजपुर गांव आसत। ये गांव ले पुरातत्व विभाग के छिदंक नाग राजा मन राज करते रहोत हुन बेरा चो तांबा ने लिखलो बिति येथा चो इतिहास पढ़तो काजे मिरू रहे। बारसूर बाट ले एऊन भाति नाग राजा मन खूब दिन ले येथा राज करूरला। ये राजा मन चो एथाय डेरा रली। हुन बेरा ले मनुक मन चो जीवना येथा आसे। धीरे–धीरे नाग राजा मन चो राज पाट सरतो के आली पाली ने छिड़ान होली। आली पाली ने नाग

राजा मन नी रला। पाछे दीगर बस चो राजा मन आपलो डेरा के येथा नी बनाऊन भाति डोंगर, मधोता, बस्तर आऊर जगदुगुड़ा ने बनाला।

धाराऊर—हुन बेरा नाग राजा जगदेक भूशण धारावर्श आली पाली ने राज करू रहे। हुनी धारावर्श चो नाव असन लोहण्डीगुड़ा चो धाराऊर चो नाव आसे। धाराऊर, बड़े धाराऊर आऊर बेनी धाराऊर गांव एबले बले आसत। बड़े धाराऊर चो बजार पसरा ने काली माई चो जुना गुड़ी आसे। येथा षुकरवार दिने बजार भरूआय। ये बजार आली पाली चो सबले बड़े बजार आय। येथा साल भर ने मण्डई बले होऊआय। सन् 1961 में गोली काण्ड होउ रहे तेभे लोहण्ड़ीगुड़ा के आली पाली चो लोग जानुरला।

गढ़िया—बड़े धाराऊर लगे गढ़िया गांव आसे। येथा बले नाग राजा चो गढ़ रहे बलसत। सते आय तेभे तो येथा हुन बेरा चो जमक मन मिरली से।

छिंदगांव—छिंदगांव ने इन्द्रावती नदी चो कठा नाग राजा बेरा चो षिव गुड़ी एबले आसे मानतर देखरेख नी होतो के टूट—फूट होली से। हुनके बनालेक पूजा पाट करतो असन होयदे आऊर हरिक उदुम लागेदे। तेभे ऐथा दीगर बाट चो लोग मन बले दखुक लाय येदे।

चक्रकोटगढ़—चितरकोट के घूमर बले बलसत। येथा इन्द्रावती नदी चो पानी बोहुन भाति बड़े असन खोदरा ने घसरू आय। येके दखतो काजे आली पाली आऊर देष—दुनिया चो लोग एथा एसत मान्तर कोनी बले येथा चो इतिहास के नीजानत। येथा नाग राजा मन राज करते रला हुन बेरा चो षिवलिंग आऊर मूर्ति मन मिरली से। जुना लोग मन चो सुनलो गोठ के येथा चो लोग येबले नी भुलकला सत। बलसत 11वीं ले 13वीं षताब्दी चो मंझीगता नाग राजा हरिष्चन्द्र चितरकोट ने डेरा बनाऊन राज करते रहे। काकतीय राजा अन्नमदेव बारंगल ले एऊन भाति एथा चो नाग राजा हरिष्चन्द्र संगे लड़ाई करून रहे मने। बलसत दुनो राजा मन लड़ाई करते—करते धाराऊर लगले अमरू रहोत। ये लड़ाई ने नाग राजा चो बेटी चमेली बावी बले आपलो बाप बिता संगे लड़ूक लागू रहे मने। नाग राजकुमारी चमेली बावी ये लड़ाई में मरून बले अमर होली आऊर येथा चो लड़ाई सरतो के नाग राजा मन चो राज पाट येथा आऊर आली पाली सरली। बलसत राजकुमारी चमेली बावी चो मरलो पाछे इन्द्रावती नदी चो कठा हून चो मठ बनाऊन देऊ रहोत। हुन बीति मठ खूब दिन ले रली। नाग राजा मनचो बनालो बीति सात आगर सात कोड़ी गुड़ी आऊर हुतरोय तरई मन आलीपाली नें रली बे। एबय बले कहां—कहां गुड़ी आऊर तरई मन दखुकलाय मिरसत।

हल्बी कविता

नवा साल चो नवा गुहार
नवा साल चो सबके जुहार।।
जुना साल चो गोठ के गुनन।
सियान सजन चो बाट के धरून
देश चो बाड़ती चो उवाट करूं।
इया किरिया खाऊं बनाऊ तिहार
नवा साल चो नवा गुहार ।
नवा साल चो सबके जुहार।।
जिगजाग जिगजाग बिजली बरे।
ढायडूंस गुलाय फटका फूटे।।
नोट के संगाऊं बचाऊं चिल्हर।
नवा साल चो नवा गुहार ।
नवा साल चो सबके जुहार।।
मंद लंदा चो धार बोहसे।
काम बुता चो थुतुरथुमा।।
मसागत काजे करूं बिचार।
नवा साल चो नवा गुहार।
नवा साल चो सबके जुहार।।
खाते पिवतो निहाय गोचर
बरन बरन चो होयसे बिमार।
गोबर खत ने होयदे सुधार ।
नवा साल चो नवा गुहार ।।
नवा साल चो सबके जुहार।।
पढ़ाई लिखई चो मुर के धरूं
गियान धियान चो गोठ के धरूं
तेबे चुटुम रूटुम हेय दे घर दुआर।
नवा साल चो नवा गुहार ।
नवा साल चो सबके जुहार।।

देशवती कौशिक पटेल 'देश'
व्याख्याता (हिंदी)
कोंडागांव छ.ग.

हल्बी के जानूं (हल्बी को जानें)

गोठ बात (संवाद) हल्बी

राम–राम मंगलू
राम–राम सोमारू
काय करसीत ना?
(क्या कर रहे हो?)
कांई नी करें दादा बसलेंसे ना।
(कुछ नहीं,बैठा हूं भैया जी।)
कहां जाऊ रहीस ना?
(कहां गया था?)
शहरे जाउ रहें ना
(शहर गया था)
काय काय घेनलीस?
(क्या–क्या खरीदे आप?)
गोटोक धोती आरू गोटोक साफी घेनले ना
(एक धोती और एक गमछा खरीदा)
जमाय कसन आसास दादा?
(सभी कैसे हैं भैया जी?)
जमाय नंगत आसूं ना
(सभी ठीक हैं)
आजकाल बेड़ा ने काय बूता करासीत ?
(आजकल खेती बाड़ी में क्या काम चल रहा है?)
तुमी कित भाई बहिन आहासीत?
(तुम कितने भाई बहन हो?)
आमी दूय भाई गोटोक बहिन
(हम दो भाई और एक बहिन हैं।)
तुय कितरो पड़लीसीत ना?
(आप कितने पढ़े–लिखे हैं?)
मय बारमी पास आसें ना
(मैं बारहवीं पढ़ा हूं)
घरे कितरो लेका–लेकी आसत?
(आपके कितने बच्चे हैं?)
मोचो गोटोक लेका गोटोक लेकी आसे।
(मेरे एक लड़का और एक लड़की है।)
गांव ने असपताल आसे की नहीं?
(गांव में अस्पताल है कि नहीं?)
गांव अस्पताल आसे।
(गांव में अस्पताल है)
स्कूल ने गुरूजी मन रोजे ऐसोत की नहीं?
(स्कूल में शिक्षक रोज आते हैं कि नहीं?)
स्कूल ने गुरूजी मन रोजे एउआत
(शिक्षक रोज स्कूल आते हैं)
लेका लेकी के खूबे पढ़ातो आय
(लड़का–लड़की को खूब पढ़ाना है)
निशा नाश चो जड़ पीवतो नुहाय
(नशा नाश का जड़ है, नशापान न करें)
देहें नंगत रले मन बले नंगत रहूआय
(स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ्य मन का वास होता है)
आले अदाय मय जायसे
(तो, अब मैं चलता हूं)
आले राम राम जुहार
(राम राम जुहार)

फार्म–4

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम की धारा 19 डी के अंतर्गत अपेक्षित 'गुड़दुम' नामक पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरणः–

1. प्रकाशन का स्थान–	:	सन्मति गली, दुर्गा चौक के पास, जगदलपुर छ.ग.
2. प्रकाशन की आवर्तता–	:	त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम–	:	सनत कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक है?–	:	हां
4. पता–	:	सन्मति गली, दुर्गा चौक के पास, जगदलपुर छ.ग.
5. प्रकाशक का नाम–	:	सनत कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक है?–	:	हां
5. सम्पादक का नाम–	:	सनत कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक है?–	:	हां
पता–	:	सन्मति गली, दुर्गा चौक के पास, जगदलपुर छ.ग.
6. उन व्यक्तियों के नाम और पते, जो पत्रिका के मालिक और कुलप्रदत्त पूंजी के एक–एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं–	:	सनत कुमार जैन, सन्मति गली, दुर्गा चौक के पास, जगदलपुर छ.ग.

स्पष्टीकरण

1—'गुड़दुम' पत्रिका का प्रकाशन किसी तरह के आर्थिक लाभ के लिए नहीं किया जा रहा है बल्कि स्थानीय बोली के लोगों के बीच रचनाधर्मिता बढ़ाने, विकसित करने के लिए उनकी रचनाओं का प्रकाशन किया जायेगा।

2—जिस तरह कोस—कोस में पानी का स्वाद बदल जाता है उसी प्रकार बोलचाल में भी पांच कोस में बदलाव होता है; यह एक कहावत का भावार्थ है। ठीक यही स्थानीय बोलियों के साथ भी हो रहा है। हल्बी, भतरी में उड़िया, तेलगु और मराठी भाषा का प्रभाव तो है ही, आपस में भी घालमेल है।

3—छत्तीसगढ़ी बोली का भी काफी प्रभाव है।

4—साथ ही साथ स्थानीयता, परम्परागत बोलचाल और आधुनिकता का भी प्रभाव देखा जा सकता है।

5—हल्बी को अब तक मानक स्वरूप प्रदान नहीं किया गया है।

6—पत्रिका के लिए रचनाकारों से प्राप्त रचनाओं का अध्ययन बताता है कि हर क्षेत्र की बोली में अंतर है।

7—रचनाकारों की रचनाओं को किंचित सुधार कर जस का तस प्रकाशित करना ही उचित जान पड़ता है क्योंकि मानक तय नहीं किये गये हैं तो हर किसी का दावा है कि उन्होंने जो लिखा है वही मानक है।

8—परम्परागत गीत कथाओं में किये गये वार्तालाप मानक रूप के इर्द—गिर्द हैं पर एकरूपता का अभाव है।

9—'गुड़दुम' का प्रयास होगा कि एक (मानक) रूप के आसपास रचनाओं में बोली का प्रयोग हो।

10—रचनाकारों के द्वारा प्रदत्त रचनाओं को प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिका का उद्देश्य रचनाओं और विचारों का आपसी प्रसारण मात्र है न कि भाषा, व्याकरण आदि सिखाना, पढ़ाना और शोध करना।

11—भाषायी भिन्नता से असहमति के लिए मूल लेखक से सम्पर्क कर उन्हें भाषा संबंधी नियमावली से अवगत करायें तो आपका सहयोग प्रशंसनीय होगा।

12—अपने—अपने क्षेत्र के रचनाकारों को लेखन के लिए प्रेरित कर उनकी रचनाएं प्रकाशन हेतु भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही साथ उन्हें भाषायी ज्ञान भी देवें तो स्थानीय बोलियों के मूलभूत विकास के लिए आपका योगदान होगा। साथ ही साथ भविष्य के लिए नये रचनाकार तैयार होंगे।